## विचार बिन्दु

मन जिस रूप की कल्पना करता है वैसा हो जाता है,
आज जैसा वह है वैसे उसने कल कल्पना की थी। –योगवशिष्ठ

# भारत के पारंपरिक तालाबों का संरक्षण जलवायु परिवर्तन अनुकूलन के लिए अनिवार्य है

आज की चर्चा इस बात पट केन्द्रित है कि यदि शहरों को पानी पीना है तो तालाब व एनीकट जैसे ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर में निवेश अनिवार्य है। थोड़ी देर के कल्पना कीजिये कि आप एक बहुत बड़े शहर में रहते हैं। सारी सुख-सुविधायें आपके पास उपलब्ध हैं। बस अब पानी की कमी पड़ने लगी है, क्योंकि निरंतर बढ़ते हुये शहरवासियों की संख्या की कारण आपके पारंपरिक जलस्त्रोत सूख गये हैं। आप का सबसे बड़ा पारंपरिक बाँध जहाँ से आपको पानी मिलता था, अब सूख गया है। पारंपरिक बाँध इसलिये सूख गया क्योंकि आप उससे मिलने वाले पानी को लेते रहे, उपयोग किया, और गन्दा करके जल-मल के रूप में प्रतिदिन बहा दिया। पारंपरिक बाँध इसलिये भी सूख गया क्योंकि जिन जलग्रहण क्षेत्रों से पानी बहकर आता था अब वहां के लोगों ने अपनी आजीविका सुदृढ़ करने के लिये खेती और बागवानी करने के लिये जमीन विकसित कर लिया। मिट्टी को खेती योग्य बनाकर जल से तृप्त करना प्रारंभ कर दिया। वर्षा ला पानी जैसे ही खेत की गोद में गिरता है, मिट्टी उसे सोखना प्रारंभ कर देती है और एक बार में जब तक 90 से 100 मिलीमीटर तक बारिश न हो, वहां से पानी की एक बूँद नहीं बहती। गरीब किसानों द्वारा जहाँ-का-पानी-तहां रोकने के लिये अपने खेत में ही बंधी व खेत-तलाई बनाना न्याय के नैसर्गिक सिद्धांतों के अनुरूप ही है। अब ऊपरी जलग्रहण क्षेत्रों में रहने वाले लोग आपके सुख के लिये उस पानी को बहकर आपके पारंपरिक बाँध तक आने देने के बजाय मोर-क्रॉप-पर-ड्रॉप के सिद्धांत पर पानी का उपयोग स्वयं करने लगे हैं। वर्षा के पानी ने किसानों का आतिथ्य स्वीकार कर लिया है। अब वहीं रुक जाता। अब वर्षा की मात्रा बढ़ने तक वहीं रुका करेगा।

अब शायद आप समझ गये होंगे कि जयपुर के रामगढ़ में पानी क्यों नहीं आता? वर्षा के पानी ने किसानों का आतिथ्य स्वीकार कर लिया है। जब पानी बहकर आपके पास सैकड़ों साल तक बार-बार आता था, तब तो आप उसकी इज्जत कर नहीं पाये! शहरवासियों ने अपनी गन्दगी धोकर खूब बहाया।

समस्या अभी और भी है! किस्सा अभी तो शुरू हुआ है। आगे पढ़िये।

आपके पुराने बाँध के सूखने से आपके शहर के कुयें और बावड़ियां पानी से रीत कर केवल अपनी स्थापत्य कला का उदाहरण मात्र रह गयीं। जो थोड़ी-बहुत पानीदार थीं, उन्हें आपने कचरे से भाठ दिया। जब पानी आपके पास दौड़कर आता था, आपने उसका उपभोग कर जल-मल के रूप में बह जाने दिया। पुनर्चक्रण द्वारा पुन:-उपयोग के योग्य बनाने की अकल ही नहीं आयी।

अब मरते क्या न करते। शहर से दूर ही सही, आप एक बड़ा बांध निर्मित करते हैं, ताकि वहां से पानी लाया जा सके।आप आशा करते हैं कि उस बाँध के आसपास के गावों के संपूर्ण भू-परिदृश्य से जल एकत्र होकर आप द्वारा बनाये गये बांध में आयेगा। आता भी है। आप उस जल को सैकड़ों किलोमीटर दूर से लाकर अपने शहर में वितरित करते हैं। यह कार्य अत्यंत आवश्यक था, वर्ना जयपुर अपनी दुर्दशा के नए आयाम देख लेता। शहर के लोगों की प्यास बुझने लगती है। दो-चार साल का काम चलता है। पर तभी अचानक फिर प्यासे मरने की नौबत आती है। क्यों? उपरोक्त स्थिति का उत्तर पाने के लिये एक बार ऊपर लिखा किस्सा पुन: पढ़ लीजिये।

शहर अब धीरे धीरे पानी की जरूरत पूरी करने के लिये निरंतर एक के बाद एक दूरी नापते हुये बहुत दूर से पानी लाने को लालायित हैं। देखने सुनने में यह व्यवस्था रोचक लगती है। लेकिन यदि आप द्वारा बनाया गये नये बांध के जलग्रहण क्षेत्र में लोग वनों और मिट्टी को सुरक्षित ना करें तो क्या होगा? पहली बात तो यह है कि असंरक्षित जलग्रहण क्षेत्र से पानी के साथ बहकर आने वाली मिट्टी बड़े बांध का जीवन शीघ्र समाप्त कर देगी। दूसरी बात यह है कि जिस वाटरशेड से पानी सिमट सिमट कर आपके नये बड़े बांध में आता है, उसके साथ आने वाली मिट्टी उन किसानों की आजीविका को भी बर्बाद करके ही आती है, जिनके पास उस मिट्टी, पेड़ और वनों को संरक्षित करने के लिये आर्थिक संसाधन नहीं हैं। तब क्या कोई रास्ता है?

रास्ता तो है। दुनिया के तमाम शहर उस रणनीति का उपयोग कर स्वयं भी प्रसन्न हैं और अपने आसपास के किसानों को भी प्रसन्न रखे हुये हैं। पूरे विश्व में आज ग्रामीण-किसानों और शहरवासियों के बीच एक रोचक आर्थिक रिश्ता बन रहा है, जिसमें शहर के लोग ग्रामवासियों को उनके द्वारा जलग्रहण क्षेत्र में वनों और मिट्टी को सुरक्षित रखने के लिये भुगतान करते हैं। केवल ऐसे संरक्षित क्षेत्रों से ही साफ-सुथरा पानी बांधों को मिलता है, जिनसे अंत में शहरों को जल प्रदाय किया जाता है। इस कार्य को पूरा करने के लिये ग्रामवासी उच्चकोटि के जलग्रहण विकास कार्यक्रमों को क्रियान्वित करते हैं, जिनमें छोटे-छोटे एनीकट, तालाब और मृदा और जल-संरक्षण संरचनायें आदि शामिल हैं। इसके साथ ही जलग्रहण क्षेत्र के वनों और वनस्पतियों का संरक्षण भी किया जाता है।

**भारत में प्राचीन काल से जल प्रबंध एक पूर्ण वैज्ञानिक प्रक्रिया के द्वारा संचालित होता रहा है। जहाँ वर्षा जल संग्रह की तालाब, तलाई, बंधी, बंधुलिया आदि जैसी संरचनायें नष्ट हुई हैं, वहां भू-जल का स्तर तेजी से नीचे गिरा है। तालाब (सतही जल) और कुआँ (भूजल) स्तर के बीच पक्की और मजबूत परस्पर क्रिया पाई जाती है।**

स्वाभाविक है कि शहरों को पानी पीना है तो शहरवासियों को अपने बौद्धिक दिवालियापन को छोड़कर आसपास के जलग्रहण क्षेत्रों में तालाब व एनीकट जैसे बहुआयामी जीवनदायी ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर में स्वयं निवेश करना होगा। जहाँ से पानी आ रहा है, वहां के नागरिकों को जलग्रहण विकास के लिये मुआवजा देना अब दुनिया के बड़े शहरों की नई आर्थिक व्यवस्था है। हाल ही में हुये एक अध्ययन के अनुसार दुनिया के 416 बड़े शहर यही कर रहे हैं जहाँ कुल मिलाकर 25 बिलियन डॉलर से अधिक का लेन-देन हो रहा है। दरअसल अब पूरी दुनिया में जलग्रहण सेवाओं में निवेश बढ़ रहा है। डाउनस्ट्रीम शहर में पानी के उपयोगकर्ता, पेयजल की रक्षा करने वाले कार्यों के लिये अपस्ट्रीम वाटरशेड सेवा आपूर्तिकर्ताओं को भुगतान करते हैं। ऐसे कार्यक्रम 4.3 मिलियन हेक्टेयर से ज्यादा वाटरशेड क्षेत्रों में 170 मिलियन डॉलर के निवेश से चल रहे हैं। इन कार्यक्रमों से 230 मिलियन से अधिक लोगों को साफ़ पानी प्राप्त हो रहा है (देखें, नेचर कम्युनिकेशंस, 2018, 9:4375)।

वर्षा-जल संग्रह की छोटी संरचनायें क्लाइमेट चेंज के युग में कार्बन-संचय में भी बड़ा काम करती हैं। दुनिया भर में इस प्रकार के तालाब, एनिकट, पोंड्स या इम्पाउंडमेंट प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। अध्ययन बताते हैं कि 500 मिलियन ऐसी छोटी जल संग्रह संरचनायें दुनिया भर में मौजूद हैं। जितना जैविक कार्बन दुनिया के इन 500 मिलियन छोटे तालाबों और खेत-तलाइयों में सालाना जमा होता है, वह विश्व के सभी महासागरों में सालाना जमा होने वाले जैविक कार्बन से ज्यादा है। पूरी दुनिया के आंकड़े जोड़ने पर ज्ञात होता है कि प्राकृतिक झीलों में जहाँ कुल 30 से 70 टेराग्राम कार्बन सालाना जमा होता है, वहीं इन तालाबों, एनिकट आदि में 150 से 220 टेराग्राम कार्बन सालाना जमा होता है। हालांकि जैविक कार्बन के वर्तमान कुल संग्रहण (1000 से 4000 टेराग्राम कार्बन सालाना) की तुलना में यह दर मामूली है, परन्तु यह दर दुनिया भर के महासागर के तलछट में जैविक कार्बन के कुल भंडारण--120-240 टेराग्राम कार्बन सालाना--से अधिक हैं। इन संरचनाओं में ऑर्गेनिक कार्बन के जमा होने की दर अधिक से अधिक 17,000 ग्राम कार्बन प्रति वर्ग मीटर प्रति वर्ष से लेकर कम से कम 148 ग्राम कार्बन प्रति वर्ग मीटर प्रति वर्ष हो सकती है। रोचक बात यह है कि छोटी जल-भराव संरचनाओं में यह दर तुलनात्मक रूप से अधिक थी (देखें, ग्लोबल बायोजियोकेमिकल साइकल्स, 2008, 22: जीबी1018)।

जलग्रहण क्षेत्र विकास एवं पेमेंट फॉर एनवायरमेंटल सर्विसेज के उपरोक्त सिद्धांत, जिनकी चर्चा आज यहां की गई है, को राजस्थान के प्रत्येक शहर में लागू करना अनिवार्य है। आने वाला समय उस परस्पर आर्थिक समन्वय से होने वाले विकास का है, जिसमें शहर और गांव एक दूसरे की मदद करते हुये परस्पर सतत विकास में योगदान दें। हालांकि दुनिया में इस प्रकार की तमाम व्यवस्थायें खड़ी हो चुकी हैं, परंतु अभी हम सो रहे हैं। हमें गहरी नींद से जागना होगा। विशेषकर हमारे उन इंजीनियर्स को जिन्हें केवल बड़े बांधों में ही भारत का आर्थिक-सामाजिक मोक्ष दिखाई देता है। बड़े बांध उपयोगी हैं, लेकिन उनकी सतत उपयोगिता बनाये रखने के लिये छोटे तालाब, खेत तलाई और एनीकट और भी अधिक महत्वपूर्ण हैं।

मध्य प्रदेश में पूर्व रीवा रियासत को बघेलखंड के नाम से पहचाना जाता है। यहाँ गांवों में लगभग 5000 तालाब हैं, जो कम से कम 200 वर्षों से लेकर 2000 वर्ष तक पुराने हैं। इन सब की पाल पर वृक्षों और वनस्पतियों के उगाने की परम्परा भी आज तक जीवित है। खेत, तालाब और तालाब की पाल पर वृक्षों की कतारें और उनके ठीक नीचे आम का बगीचा! और उस बगीचे में एक देवस्थान! ऐसे तालाब आप सतना, रीवा, सीधी और शहडोल जिलों के किसी गाँव में देख सकते हैं। यह बघेलखंड का सिग्नेचर-लैंडस्केप है। बुंदेलखंड कहे जाने वाले क्षेत्र में भी यही स्थिति मिलती है। भारत में प्राचीन काल से जल प्रबंध एक पूर्ण वैज्ञानिक प्रक्रिया के द्वारा संचालित होता रहा है। जहाँ वर्षा जल संग्रह की तालाब, तलाई, बंधी, बंधुलिया आदि जैसी संरचनायें नष्ट हुई हैं, वहां भू-जल का स्तर तेजी से नीचे गिरा है। तालाब (सतही जल) और कुआँ (भूजल) स्तर के बीच पक्की और मजबूत परस्पर क्रिया पाई जाती है। इसलिये, तालाब और कुयें दोनों को पूरक संरचनाओं के रूप में देखा और प्रयुक्त किया जाना चाहिये। सोलर वाटरपंप भी ऐसी ही पूरक संरचना है। हाइड्रोलॉजिकल संतुलन बनाये रखने व स्थायी रूप से जल संसाधनों का उपयोग और प्रबंधन करने के लिये तालाब एक विकल्प नहीं बल्कि अनिवार्यता हैं।

इतना जान लेना उपयोगी होगा कि पानी नहीं बचाया तो सभ्यताओं का विनाश तय है। यह बात बेहद साधारण होते हुये भी समकालीन नागरिकों को समझ में नहीं आती। परंतु इसमें कोई संदेह नहीं है कि अगर आपने जल संरक्षण नहीं किया तो आज नहीं कल शहरों और गांवों का मिटना सुनिश्चित है। हाँ, शहर पहले उजड़ेंगे।

**–अतिथि सम्पादक,**
**डॉ. दीप नारायण पाण्डेय**
**( इंडियन फारेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी )**
**( यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं। )**

# सरकारी स्कूल के कमरों में दरार, बारिश के मौसम में मंडरा रहा खतरा

## पावटा के उच्च माध्यमिक विद्यालय में लगभग 1200 बालक व बालिका अध्ययनरत हैं

**पावटा,** (निसं)। क्षेत्र में संचालित सरकारी स्कूलों की स्थिति भगवान भरोसे है। इनमें राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय पावटा उन पुराने सरकारी विद्यालयों में से एक है। वहीं राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय प्रधानाचार्य जयसिंह यादव ने बताया कि विद्यालय के मुख्य कमरे, प्रधानाचार्य कक्ष, कार्यालय, पुस्तकालय, क्रीडा कक्ष, लाइब्रेरी, आदि में पानी टपकने से सामग्री वस्तुएं खराब होने का डर बना रहता है।

वहीं विद्यालय में प्रयोगशाला व कमरों में बारिश में पानी टपकता है व बड़ी-बड़ी दरारें हैं। इसका कनिष्ठ अभियंता व सर्वेयरों द्वारा सर्वे भी करवाया गया था। सर्वेयरों द्वारा लगभग 12 लाख का खर्चा बताया गया था। जयसिंह यादव ने बताया कि शुरुआत में दीवारों में दरारें सामान्य थी जो दिन-ब-दिन बढ़ती ही जा रही है। बारिश का दौर जारी होने के कारण जमीन की मिट्टी नम रहती है। इस तरह से दरार बढ़ती जा रही है, उससे दुर्घटना की संभावना भी बढ़ती ही जा रही है। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में लगभग 1200 बालक व बालिका अध्ययनरत हैं। वहीं विद्यालय में कमरों, बरामदों में दरार को देखते हुए केवल दीवार ही नहीं बल्कि स्कूल की छत की दशा भी बेहतर नहीं है। समय-समय पर विद्यालय अपने स्तर पर कार्य करवा कर थोड़ी बहुत मरम्मत करवा देता है। छत से पानी रिसने के कारण बच्चों को खासी परेशानी होती है। अभिभावकों में डर बना रहता है। विद्यालय की दशा में सुधार के लिए प्रशासन और नगरीय निकाय की ओर से अब तक कोई पहल नहीं की गई है। कमरों की दीवार ढहने या बरामदे की छत गिरने से कभी भी बड़ी घटना हो सकती है।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के मुख्य कमरों में बारिश के मौसम में पानी टपकता रहता है।

- विद्यालय की दशा में सुधार के लिए प्रशासन और नगरीय निकाय की ओर से अब तक कोई पहल नहीं की गई है

# 'समय रहते कपास की फसल में सफेद मक्खी रोग पर नियंत्रण आवश्यक'

**श्रीगंगानगर,** (निसं)। जुलाई माह में लगातार बादलवाही रहने व बरसात रहने के कारण नमी बढ़ने के साथ गंगानगर में बीटी कपास व अन्य खरीफ फसलों में रस चूसक कीटों का प्रकोप बढ़ने की संम्भावना बढ़ी है। इस संबंध में कृषि विभाग की ओर से किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की गई है।

कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. जी.आर. मटोरिया ने बताया कि इन दिनों बीटी कपास की फसल में रस चूसक कीटों में सफेद मक्खी, हरा तैला (जैसिड) एवं थ्रिप्स का प्रकोप देखा गया है। बीटी कपास में सफेद मक्खी का प्रकोप अन्य रस चूसक कीटों की अपेक्षा अधिक पाया गया है। समय पर सफेद मक्खी पर नियंत्रण के उपाय नही अपनाए जाए तो उत्पादन में अत्यधिक कमी हो सकती है। उन्होने बताया कि सफेद मक्खी के बारे में जानना एवं नियमित रूप से खेत का निरीक्षण कर प्रभावी नियंत्रण करना अति आवश्यक है। सफेद मक्खी तेज उड़ने वाला, पीले शरीर और सफेद पंख का कीट है। छोटा एवं हल्का होने के कारण यह कीट हवा द्वारा आसानी से एक स्थान से दूसरे स्थान पर चला जाता है। इस कीट की प्रौढ़ मादा अपने जीवन काल में 100-125 अण्डे देती है। अण्डे पत्तियों की निचली सतह पर दिए जाते हैं।

इसके अण्डाकार शिशु पत्तों के निचली सतह पर चिपके रह कर रस चूसते रहते हैं और एक चिपचिपा पदार्थ उत्पन्न करती है, जिसे हनीडयू कहा जाता है। इसके कारण पौधों में फंगल की बीमारी हो जाती है। सफेद मक्खी से ग्रसित पौधे पीले व तैलीय दिखाई देते हैं एवं पौधों की पत्तियां सिकुड़ कर मुड़ने लगती हैं। इस प्रकार प्रकाश संशेषण की प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न होती है, जिसके कारण उपज एवं उत्पाद की गुणवत्ता में काफी कमी आती है।

सफेद मक्खी लीफकर्ल वायरस जैसे विषाणु को फैलाने में वेक्टर के रूप में कार्य करती है। उन्होंने बताया कि किसानों को चाहिए की वह अपनी कपास की फसल का बारीकी से निरीक्षण करें तथा निरीक्षण के दौरान सफेद मक्खी के 8-12 वयस्क प्रति पत्ती, 16-20 अवयस्क (निम्फ) प्रति पत्ती पाए जाने पर ही कीटनाशाकों का छिड़काव करना चाहिए।

सफेद मक्खी कीट प्रबंधन के लिए खाली पीपों पर पीला पेंट व अरण्डी का तेल लगाकर 8 से 12 प्रति बीघा की दर से कपास फसल में कीट के सक्रिय काल में लगायें। कपास के खेत में व आस-पास खरपतवार जैसे कांगी बूटी, पीली बूटी, कांग्रेस घास, जंगली सूरजमुखी इत्यादि को नष्ट कर दें, क्योंकि इस पर सफेद मक्खी ज्यादा पनपती है।

- कृषि विभाग श्रीगंगानगर ने जारी की एडवाइजरी

# बारिश से नमक उद्योग बुरी तरह प्रभावित हुआ

**जोधपुर,** (कासं)। जिले में गत तीन दिन तक हुई भारी बारिश से फलोदी-बाप क्षेत्र का नमक उद्योग तबाही के कगार पर पहुंच गया है। भारी बारिश का यह आलम है कि बाप क्षेत्र में तीन दिन से बारिश की एक बूंद नहीं गिरी, लेकिन नमक उत्पादन क्षेत्र बाप रिण, गुड्डी रिण व मलार रिण में बरसाती पानी की आवक जारी है। भारी पानी आने से गुड़ी व मलार रिण का इलाका जलमग्न हो गया है। जिस वजह से वहां का नमक उद्योग को भारी नुकसान पहुंचा है।

**कुएं और क्यारियां ध्वस्त :-** पानी में डूबे सैकड़ों कुएं ध्वस्त हो रहे हैं। क्यारियां क्षतिग्रस्त हो रही हैं। ऐसे में यहां 4 से 6 माह तक नमक का उत्पादन बंद ही रहेगा। नमक उत्पादकों ने यहां बरसात के कारण करोड़ों रुपए के नुकसान का अनुमान लगाया है। बाप रिण क्षेत्र में जगह-जगह बरसाती पानी जमा है। जीएसएस के निकट रिण इलाका उथले समुद्र की भांति दिख रहा है। पानी की वजह से उत्पादक अपनी क्यारियों व कुओं तक नहीं जा पा रहे। सड़क के नजदीक जिनके कुएं व क्यारियां हैं वे पानी निकासी के जतन कर रहे हैं। नमक उत्पादन संगठन फलोदी के मधु जोशी ने बताया कि इस क्षेत्र में 400 इकाइयों में सालाना 2 से ढाई लाख टन नमक का उत्पादन होता है। पानी की वजह से बड़ी तादाद में कुएं ढहने के कगार पर हैं। नुकसान का सही आंकलन पानी उतरने के बाद पता चलेगा।

- तालाबों में पानी की आवक जारी,
- नमक उत्पादकों ने यहां बरसात के कारण करोड़ों रुपए के नुकसान का अनुमान लगाया है।

# पिता की स्मृति में बालिकाओं के लिए कॉम्पलैक्स बनवाया

**सांभरझील,** (निसं)। यहां महात्मा गांधी राजकीय दरबार उच्च माध्यमिक विद्यालय इंग्लिश मीडियम स्कूल में अध्ययनरत बालिकाओं की समस्या को दृष्टिगत रखते हुए स्कूल प्रशासन की ओर से अनुरोध किए जाने पर मुंबई व्यवसाई सांभर प्रवासी नवनीत चौधरी ने अपनी माता राधादेवी की इच्छा पर अपने पिता जुगलकिशोर चौधरी की स्मृति में आधुनिक सुविधाओं युक्त पांच लाख से अधिक की राशि खर्च कर वॉशरूम कॉपलेक्स बनवा कर इसे स्कूल प्रशासन को समर्पित किया।

इस गर्ल्स वॉशरूम कॉम्पलेक्स का लोकार्पण शनिवार को सांभर समाज चैरिटेबल ट्रस्ट, सांभर समाज मुम्बई व नागरिक समिति के पदाधिकारियों की ओर से प्रधानाचार्य टीकमचंद मालाकार व स्कूल स्टाफ के अलावा अनेक गणमान्य लोगों की मौजूदगी में फीता काटकर इसे स्कूल प्रशासन की सुपुर्द किया। स्कूल प्रशासन को विगत वर्षों में विद्यालय में विकास के लिये भामाशाहों की ओर से मिल रहे अपेक्षित योगदान व सहयोग से अभिभूत होकर सांभर समाज चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा लाइब्रेरी ब्लॉक की रिपेयरिंग के लिये तीन लाख रूपये, गट्टानी चेरिटबल ट्रस्ट की ओर से रमेश गट्टानी ने करीब पौने दो लाख रूपये की लागत का एक स्मार्ट बोर्ड स्कूल को भेंट किये जाने की घोषणा की तो मौजूद सभी ने उनका करतल ध्वनि से स्वागत किया। उक्त कार्यक्रम के दौरान स्कूल में बालिकाओं की ओर से आकर्षक रंगोली बनायी गयी तथा सभी अतिथियों का जोरदार अभिनन्दन किया गया। स्कूल प्रधानाचार्य टीकमचन्द मालाकार ने भामाशाहों को स्कूल का अवलोकन करवाया तथा निरीक्षण के दौरान सभी ने स्कूल प्रशासन की ओर से करवाये जा रहे बेहतर कार्य के लिये जमकर तारीफ भी की।

इस मौके पर सांभर समाज चेरिटेबल ट्रस्ट मुम्बई के अध्यक्ष रमेश गट्टानी, ओमप्रकाश लाहोटी, नवनीत लाहोटी, नन्दकिशोर हुरकट, ओमप्रकाश टाक, नागरिक विकास समिति के कार्यकारी अध्यक्ष अनिल गट्टानी, सचिव अरूण शर्मा, भाजपा मण्डल अध्यक्ष जितेन्द्र डांगरा, नेशनल यूथ अवार्डी पवन कुमोर मोदी, लवण व्यवसायी अखिलेश माथुर, पूर्व पार्षद नाथूलाल गट्टानी, सेवानिवृत्त शिक्षक शेरसिंह बारेठ की मौजूदगी रही। मंच संचालन नेमीचन्द व गजानंद कुमावत ने किया।

- सांभर दरबार स्कूल को मिली एक और बड़ी सौगात

सांभर महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूल में भामाशाहों ने गर्ल्स वॉशरूम कॉम्पलेक्स का उद्घाटन किया।

## राशिफल रविवार 31 जुलाई, 2022

पंडित अनिल शर्मा

सावन मास, शुक्ल पक्ष, तृतीया तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2079, मघा नक्षत्र दिन 2:20 तक, वारियान योग सांय 7:10 तक, तैतिल करण दिन 3:40 तक, चन्द्रमा सिंह राशि में संचार करेगा।

**ग्रह स्थिति:** सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-मेष, बुध-कर्क, गुरू-मीन, शुक्र-मिथुन, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज यमघट योग सूर्योदय से दिन 2:20 तक है। राजयोग दिन 2:20 से रात्रि 4:19 तक है। रवियोग 2:20 से आरम्भ होगा। आज बुध मघा सिंह से रात्रि 3:45 पर प्रवेश करेगा। आज मधुश्रवा तीज, लघु तृतीय व्रत और मेला तीज जयपुर में है। आज से मुहर्रम मु.मास हिजरी सन 1444 आरम्भ होगा।

**श्रेष्ठ चौघड़िया:** चर 7:34 से 9:14 तक, लाभ-अमृत 9:14 से 12:33 तक, शुभ 2:13 से 3:52 तक।

**राहूकाल:** 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 5:54, सूर्यास्त 7:12

**मेष**
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी और परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

**वृष**
घर-परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। आज परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

**मिथुन**
महत्वपूर्ण और अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

**कर्क**
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

**सिंह**
अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। कार्यों में सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

**कन्या**
आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि हो सकती है। अनावश्यक धन खर्च होगा। घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

**तुला**
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आवश्यक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

**वृश्चिक**
महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में शुभ कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

**धनु**
धार्मिक-सामाजिक समारोह में भाग लेने का अवसर मिलेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

**मकर**
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

**कुंभ**
परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

**मीन**
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। स्वास्थ्य से संबंधित चिन्ता दूर होगी।